# अध्यात्म समयोदय-काव्य

**( समयसार का संक्षिप्त सार )**

**रचयिता**

आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

## मंगलाचरण

जिन-सिद्धों को हो नमन, दर्श, ज्ञान, व्रत-धार।
कुन्दकुन्दाचार्य ने, कहा समय का सार॥1॥

❋❋❋

अचल अमल हैं सिद्ध वे, अतुल-गुणाधिक धार।
अनुपम-सुख में लीन जो, शुद्ध-समय का सार॥2॥

❋❋❋

रत्नत्रय में लीन हो, स्व हि समय जो सार।
पर में होता पर-समय, यही समय का सार॥3॥

❋❋❋

रत्नत्रय जहँ राग है, वहाँ भेद-व्यवहार।
रत्नत्रय की एकता, जहाँ समय का सार॥4॥

❋❋❋

दर्श, ज्ञान, व्रत-भावना, आत्म-रूप स्वीकार।
सर्व-दुखों से मुक्त हो, यही समय का सार॥5॥

❋❋❋

नव-पदार्थ सम्यक्त्व वे, हों, अबन्ध चित्-धार।
विशुद्ध-नय से जानते, यही समय का सार॥6॥

❋❋❋

धन-इच्छुक नृप चाहते, चलें राज-अनुसार।
जीव-राज को जानकर, लीन, समय का सार॥ 7॥

❋ ❋ ❋

कर्म तथा नोकर्म में, मैं- मम यह ममकार।
अज्ञ-पना उसमें पले, कहे समय का सार॥ 8॥

❋ ❋ ❋

अजीव में निज-बुद्धि हो, बंध होय, संसार।
निजात्म के उपयोग से, मोक्ष, समय का सार॥ 9॥

❋ ❋ ❋

निश्चय-नय निज-भाव का,- कर्त्ता जीव विचार।
जड़-कर्त्ता व्यवहार से, निजी समय का सार॥ 10॥

❋ ❋ ❋

है त्रिकाल पर-द्रव्य मम, मूढ़तम स्वीकार।
पर-पदार्थ में मोह-बिन, साधु समय का सार॥ 11॥

❋ ❋ ❋

जड़ अरु जन अपना कहे, अज्ञ-पने को धार।
जीव सदा उपयोग-मय, धार, समय का सार॥ 12॥

❋ ❋ ❋

तन-आतम यदि एक न, जिन-तन-थुदि बेकार।
तन-थुदि यह व्यवहार है, स्वस्थ, समय का सार॥ 13॥

❋ ❋ ❋

ज्ञानादिक-गुण-स्तवन, निश्चय-थुदि स्वीकार।
नगरादिक न नृप कहो, स्वगुण समय का सार॥ 14॥

❋ ❋ ❋

इन्द्रिय-आदिक जीतकर, जिन होता सुखकार।
कर्म-बंध को क्षीणकर, पूर्ण, समय का सार॥ 15॥

❋ ❋ ❋

पर-पदार्थ को छोड़ना, कहते प्रत्याख्यान।
पर-पदार्थ सब भिन्न जब, समयसार का ज्ञान॥ 16॥

❋ ❋ ❋

एक, शुद्ध हि आत्मा, दर्श, अरूपी, ज्ञान।
ना परमाणु-मात्र मम, समयसार पहचान॥ 17॥

❋ ❋ ❋

पुद्गल-मय जो कर्म है, आतम से पर जान।
कर्मोदय फल दुःख दे, समयसार सुख मान॥ 18॥

❋ ❋ ❋

शुद्ध-जीव रस आदि बिन, दर्श, ज्ञान-मय जान।
निज-अमूर्त संस्थान न, समयसार-श्रद्धान॥ 19॥

❋ ❋ ❋

वर्णादिक पुद्गल रहे, अन्य; आत्म से जान।
संयोगज हैं स्वभाव न, समयसार-व्याख्यान॥ 20॥

❋ ❋ ❋

आतम में व्यवहार से, वर्णादिक पहचान।
नीर-क्षीर-सम एक भी, समयसार में जान॥21॥

❋ ❋ ❋

वर्णादिक यदि जीव हैं, जड़; चेतन हो जान।
लक्षण से वे भिन्न हैं, समयसार पहचान॥22॥

❋ ❋ ❋

जीव-समास जु जीव में, अशुद्ध-नय से जान।
गुणस्थान भी जीव ना, समयसार की शान॥23॥

❋ ❋ ❋

जहँ निज, आस्रव-भाव में, नहीं भिन्नता जान।
क्रोधादि-कर बंध हो, समयसार का ज्ञान॥24॥

❋ ❋ ❋

आस्रव, निज में भिन्नता, जाने; बंध न जान।
आस्रव से ग्लानि करें, समयसार हित जान॥25॥

❋ ❋ ❋

मैं एकाकी शुद्ध हूँ, रत्नत्रय-सह मान।
निज से क्रोधादिक तजूँ, समयसार पहचान॥26॥

❋ ❋ ❋

निज में कर्म-निबद्ध जो, नित्य,शरण न जान।
दुख है, दुख को जो फले, समयसार दे ज्ञान॥27॥

❋ ❋ ❋

कर्म व न नोकर्म का, कर्त्ता वा परिणाम।
जीव जानता-मात्र है, समयसार वह नाम॥28॥

❋ ❋ ❋

निश्चय से पर-द्रव्य का, ग्रहण-मेल न जान।
निमित्त-नैमित्तिक कहे, समयसार का ज्ञान॥29॥

❋ ❋ ❋

निश्चय से यह आत्मा, निज का कर्त्ता होय।
भोक्ता भी निज का रहे, समयसार-मय होय॥30॥

❋ ❋ ❋

आत्म व पुद्गल का कहो, आत्म जु कर्त्ता होय।
द्वि-क्रियावादी कहा, समयसार फिर खोय॥31॥

❋ ❋ ❋

आत्म व पुद्गल के कहे, परिणामों को एक-।
आत्मा-कर्त्ता है रहा, समय गहे न नेक॥32॥

❋ ❋ ❋

जड़-कर्मों का हो उदय, सुख, दुख-मय हो पूर।
कर्म-हेतु से भोगता, समयसार फिर दूर॥33॥

❋ ❋ ❋

पर का कर्त्ता मानता, अज्ञ-आत्म वह मान।
पर निज, निज पर न करे, समयसार संज्ञान॥34॥

❋ ❋ ❋

मैं; क्रोधादि मान्यता, बन्धक की पहचान।
मोह-तजे, निश्चय मिले, समयसार का ध्यान ॥ 35 ॥

❋ ❋ ❋

घट-पट द्रव्यों को करे, कर्त्ता वह कहलाय।
तन्मय होता जो नहीं, समयसार हिय लाय ॥ 36 ॥

❋ ❋ ❋

शुभ व अशुभ हि भाव-कर, भाव-कर्मि हो जाय।
भोक्ता वह उनका रहे, समयसार-विसराय ॥ 37 ॥

❋ ❋ ❋

कर्त्ता न यह आत्मा, कर्म-गुणों के साथ।
रहे अकर्त्ता अन्य का, समयसार परमार्थ ॥ 38 ॥

❋ ❋ ❋

दोष, गुणों को नृप करे, नय; व्यवहार कहाय।
व्यवहारी निज-बाह्य है, समयसार बतलाय ॥ 39 ॥

❋ ❋ ❋

ज्ञान, दर्श-सम क्रोध ना, आतम का कहलाय।
एक मानते क्रोध को, समयसार कब भाय ॥ 40 ॥

❋ ❋ ❋

निमित्त-नैमित्तिक रहा, कर्म-बंध जहँ जान।
फले कर्म फिर बंध हो, समयसार पहचान ॥ 41 ॥

❋ ❋ ❋

आग जहाँ घृत है जले, जलता घृत फिर आग।
राग मिटे हि अबंध निज, समयसार निज-पाग ॥41॥

❋ ❋ ❋

निश्चय-नय से आत्मा, करता ना पर-भाव।
समयसार में लीन हो, पाता वही स्वभाव ॥43॥

❋ ❋ ❋

अपने ही वह योग को, करता शुद्ध हि जीव।
करता निज-उपयोग भी, समयसार में जीव ॥44॥

❋ ❋ ❋

ज्ञानी ज्ञान हि भाव को, अज्ञ; अज्ञ ही भाव।
समयसार-मय होय जो, पाता वही स्वभाव ॥45॥

❋ ❋ ❋

जड़ का हो जो परिणमन; जड़ के द्वारा जान।
शुद्ध हि निश्चय जानता, समयसार पहचान ॥46॥

❋ ❋ ❋

अन्य-द्रव्य अरु भाव का, कर्त्ता आतम जान।
नय व्यवहार हि बोलता, समयसार में जान ॥47॥

❋ ❋ ❋

स्वर्ण बने कुण्डल जहाँ, कड़ा बने वह लोह।
भाव-शुभाशुभ हों तहत, समयसार कब सोह ॥48॥

❋ ❋ ❋

स्व हि समय को जानता, नहीं पक्ष स्वीकार।
अनेकान्त के ज्ञान में, समयसार का सार॥49॥

❋❋❋

रागी बंधता कर्म से, मुक्त विरागी जान।
राग-छोड़ना, जिन कहें- सार; समय का ज्ञान॥50॥

❋❋❋

निश्चय से शुद्धात्मा, मुनि, केवली जान।
ज्ञानी निज-पा, मोक्ष को,- पाय; समय की शान॥51॥

❋❋❋

है स्वभाव से आत्मा, ज्ञाता, दृष्टा जान।
कर्म-धूल से है ढका, समयसार अन्जान॥52॥

❋❋❋

तरु से गिरता फल कभी, लगे न तरु पर जान।
कर्म झड़ें फिर न फलें, समय-विज्ञ पहचान॥53॥

❋❋❋

दर्शन, ज्ञान, चरित्र जब, जघन्य रूप हि जान।
बंधक होते कर्म के, समय-दूर तब मान॥54॥

❋❋❋

बाला ना, तरुणी करे-, विकार नर को जान।
विज्ञ न, विधि उस अज्ञ को- बंध; समय में ज्ञान ॥ 55 ॥

❋ ❋ ❋

यथा-पुरुष को भोज्य जो, रस, रुधिरादिक जोय।
पूर्व-बद्ध विधि-राग से, बंध, समय-सुख खोय ॥ 56 ॥

❋ ❋ ❋

आग-तपा सोना जहाँ, स्वर्ण-पना न खोय।
कर्मोदय में विज्ञ भी, समय में न विधि जोय ॥ 57 ॥

❋ ❋ ❋

पर-पदार्थ से मन हटा; होय आत्म का ध्यान।
निज-स्वभाव में कर्म-क्षय, समयरूप सुख मान ॥ 58 ॥

❋ ❋ ❋

वीतराग-समदृष्टि के, नहीं भोग में आश।
भोग रहें; पर निर्जरा, समयसार निज-पास ॥ 59 ॥

❋ ❋ ❋

परमाणु-सम संग में, जिसका होता राग।
पूर्ण-विज्ञ क्यों न रहे, नहीं समय में जाग ॥ 60 ॥

❋ ❋ ❋

राग-भाव वा भोग्य सब, क्षणिक-अवस्था रूप।
इन द्वय में न आश हो, समयसार अनुरूप ॥ 61 ॥

❋ ❋ ❋

विज्ञ संग से हो विरत, संग-आश न पुण्य।
कर्म-संग भी न रहे, समयसार बस; धन्य ॥62॥

❋ ❋ ❋

उदय प्राप्त उस कर्म में, भोग-बुद्धि को छोड़।
आगे हों यह वांछा- नहीं; समय मन-मोड़ ॥63॥

❋ ❋ ❋

सर्व-द्रव्य के मध्य में, विज्ञ; विराग अलिप्त।
समय में न विधि-बंध हो, पंक स्वर्ण न लिप्त ॥64॥

❋ ❋ ❋

सर्व-द्रव्य के मध्य में, अज्ञ सरागी लिप्त।
समय में विधि हि बंध हो, पंक लोह फिर लिप्त ॥65॥

❋ ❋ ❋

नागफणी-जड़ जब मिले, हथिनि तोय, सिन्दूर।
सीसा, अग्नि स्वर्ण हों, समय-धर्म अनुकूल ॥66॥

❋ ❋ ❋

कर्म-कीट रागादि वे, रहे कालिका जान।
रत्नत्रय-औषध मिले, ध्यान समय में मान ॥67॥

❋ ❋ ❋

निकट-भव्य लोहा रहा, योगि तप-धमकाय।
लोहा, स्वर्ण बने, तथा- समय मोक्ष-सुख पाय ॥68॥

❋ ❋ ❋

धन हेतु नृप-सेवता, नृप देता धन भोग।
न सेवे समदृष्टि जो- कर्म, समय सत्-योग ॥ 69 ॥

❋ ❋ ❋

सद्दृष्टि निःशंक है, अतः न भय हो जान।
मरणादिक ना सप्त-भय, समय निशंकित मान ॥ 70 ॥

❋ ❋ ❋

कर्म-बंध के हेतु जो, मोहादिक सब भाव।
समय शुभाशुभ-योग तज, बने निशंक स्वभाव ॥ 71 ॥

❋ ❋ ❋

विधि-फल, सर्व-स्वभाव में, ना मुनि कांक्षा होय।
समय वही निःकांक्ष है, समदर्शन-सुख जोय ॥ 72 ॥

❋ ❋ ❋

सर्व-वस्तु के धर्म में, नहीं ग्लानि जब होय।
निर्विचिकित्सा-अंग-सह, समयसार-सुख सोह ॥ 73 ॥

❋ ❋ ❋

कर्म-उदय में मूढ़ता, मोह-तजे निज-राम।
अमूढ़दृष्टि सु-अंग-सह, समय पाय आराम ॥ 74 ॥

❋ ❋ ❋

सिद्ध-गुणों में लीन हो, विभाव-गुण-गण भूल।
उपगूहन-गुण-धारकर, समयमयी अनुकूल ॥ 75. ॥

❋ ❋ ❋

मिथ्यामग से दूर हो, मोक्षमार्ग को पाय।
स्थितिकरण निज-गुण सहित, समय सदा ही भाय ॥ 76 ॥

❋ ❋ ❋

मोक्षमार्ग में जो निरत, तीनों साधु महान।
प्रेम रखे, उनमें बने, - वत्सल-समयी जान ॥ 77 ॥

❋ ❋ ❋

आत्मज्ञान-रथ पर चढ़े, मन-रथ रोके वेग।
जिन-प्रभावना हो, समय,- में समकित संवेग ॥ 78 ॥

❋ ❋ ❋

मात्र चेष्टा से नहीं, होय राग से बंध।
हो विराग निज-ध्यान-मय, रहता समय अबंध ॥ 79 ॥

❋ ❋ ❋

आयु-क्षय से हो मरण, जिनवर का सिद्धांत।
आयु-हरण व देय कहे, होय समय में भ्रान्त ॥ 80 ॥

❋ ❋ ❋

हिंसादि उन पाप का, कर्त्ताकर्त्ता जीव।
यह समझे अज्ञान है, समय-लीन जब जीव ॥ 81 ॥

❋ ❋ ❋

जीव मरे या ना मरे, जहाँ प्रमादी होय।
वहीं पाप का बंध हो, समय दुःख में खोय ॥ 82 ॥

❋ ❋ ❋

हिंसादिक सब पाप हैं, अहिंसादि हि पुण्य।
निजी-समय में लीन जब, नहीं पाप व पुण्य ॥83॥

❋ ❋ ❋

मिथ्यात्वी, विषयी जहाँ, करे कर्म का बंध।
होता मुक्त समय वही, शिवमग-मयी अबंध ॥84॥

❋ ❋ ❋

स्व-स्व कर्मों का उदय- हो तब सुख-दुख होयँ।
सुख-दुख-कर्त्ता मानता, समय-अज्ञ तब होय ॥85॥

❋ ❋ ❋

अध्यवसाय हि पुण्य वा, पाप-कर्म का बंध।
सदा कराता, और मुनि, समय-सु-लीन अबंध ॥86॥

❋ ❋ ❋

अध्यवसाय, परिणाम व, भाव, चित्त, विज्ञान।
मति, बुद्धि, व्यवसाय इक, - अर्थ, समय में जान ॥87॥

❋ ❋ ❋

विकल्प ही व्यवहार है, निश्चय में वह हेय।
निश्चय में मुनि मोक्ष को,- पायें, समय सु-ज्ञेय ॥88॥

❋ ❋ ❋

व्रत, तप, गुप्ति, शील वा, समिति आदिक पाल।
अभव्य सुख इह-लोक बस,- पाय, समय बेहाल ॥89॥

❋ ❋ ❋

अभव्य-जीव धारण करे, -धर्म, समय न जान।
भोग-मात्र की चाह हो, भव-भव भ्रमत अजान॥90॥

❋ ❋ ❋

शास्त्र-पठन जो ज्ञान है, है पदार्थ-श्रद्धान।
समय दया चारित्र है, व्यवहारी पहचान॥91॥

❋ ❋ ❋

आत्म रहा सद्ज्ञान है, दर्श, चरित-मय मान।
त्याग व संवर है समय, निश्चय-नय से जान॥92॥

❋ ❋ ❋

नहीं कर्म के बंध से,- बंधता, ज्ञानी होय।
न अनुमोदन भोज्य की, समयसार-मय होय॥93॥

❋ ❋ ❋

राग-द्वेष-मय भाव से, विकार-मय जब होय।
अज्ञानी बन कर्म को, पर-समयी बन जोय॥94॥

❋ ❋ ❋

मुक्त-विकल्प-समाधि हि, उत्तम-प्रतिक्रम होय।
आत्म-बाह्य तब ही समय, कर्म-बंध में खोय॥95॥

❋ ❋ ❋

बन्धन जाने जो भविक, फिर भी न पुरुषार्थ।
छेद करें न कर्म का, समय मोक्ष न सार्थ॥96॥

❋ ❋ ❋

काटे, छेदे, भेद-कर, विधि से मुक्ति पाय।
भविक कर्म का नाश कर, समय शिवालय भाय॥97॥

❋ ❋ ❋

बंध-स्वभाव जु जानकर, स्व-स्वभाव भी जान।
हो विरक्त फिर कर्म को, करें समय से हान॥98.॥

❋ ❋ ❋

प्रज्ञा-द्वारा कर्म को, दूर करें भवि लोग।
वैसे प्रज्ञा से करें, शुद्ध-समय का भोग॥99॥

❋ ❋ ❋

कौन रहा ज्ञानी यहाँ, जो आतम से भिन्न।
पर-पदार्थ को निज कहे, समय-मूढ़ न अन्य॥100॥

❋ ❋ ❋

हो अपराधी भय करे, जग में भटके खिन्न।
निरपराध निःशंक हो, समय-ज्ञान-सह धन्य॥101॥

❋ ❋ ❋

आत्म-लीनता काल में, प्रतिक्रमण विष-कुंभ।
अप्रतिक्रमण आदि जब, समय-थित अमृत-कुंभ॥102॥

❋ ❋ ❋

कर्मोदय में जीव यह, अज्ञ असंयत होय।
नहीं कर्म-फल भोगता, समय अबंधक सोह॥103॥

❋ ❋ ❋

मिष्ट-दुग्ध का पान-कर, नहीं सर्प विष-खोय।
अभव्य पढ़ता फिर वहाँ, समय अशुभ ही होय॥ 104॥

❋ ❋ ❋

मीठा कडुवा विज्ञ लख, ना ही भोक्ता होय।
निर्वेगी विधि को लखे, अभुक्त-समयी सोह॥ 105॥

❋ ❋ ❋

कर्त्ता-विष्णु लोक का, वैसा समयी कर्म-।
-कर्त्ता माने, मोक्ष तब, नहीं मिले निज-धर्म॥ 106॥

❋ ❋ ❋

पर-वस्तु न आप हों, होयँ न हि मम-धर्म।
उसका कर्त्ता मानता, मिथ्या-समयी कर्म॥ 107॥

❋ ❋ ❋

पर्याय व व्यवहार से, पर का कर्त्ता जान।
न माने समयी वही, मिथ्या-दृष्टि मान॥ 108॥

❋ ❋ ❋

मिथ्या-समयी भाव का, कर्त्ता अज्ञ है जीव।
उसी हेतु मिथ्यात्वमय,- बनता कर्म अजीव॥ 109॥

❋ ❋ ❋

निश्चय-समयी विज्ञ वह, ज्ञानमयी सुविचार।
करे अज्ञ भी भाव को, अज्ञ-रूपता धार॥ 110॥

❋ ❋ ❋

जीव-द्रव्य के गुण सभी, अन्य-द्रव्य न होयँ।
रागादि-परिणाम सब, अनन्य-समयी होय॥ 111॥

❋ ❋ ❋

अन्य-द्रव्य के हेतु से, हो न अन्य का घात।
निज-स्वभाव से हो रहे, समय स्वगुण का साथ॥ 112॥

❋ ❋ ❋

शिल्पी मन-वच-काय से- अन्य-रूप न होय।
वैसे ज्ञानी लीन जब, समयी निज में खोय॥ 113॥

❋ ❋ ❋

शिल्पी मन-वच-काय से, अन्य-रूप जब होय।
अज्ञानी हो, पर-समय, तन्मय पर में खोय॥ 114॥

❋ ❋ ❋

खड़िया-मिट्टी भीत को, धवल करे यह मान।
तन्मय ना फिर, समय भी, निश्चय-नय से जान॥ 115॥

❋ ❋ ❋

खड़िया-मिट्टी भीत को, धवल करे यह मान।
तन्मय हो जिसमें समय, - का व्यवहार सुजान॥ 116॥

❋ ❋ ❋

राग, द्वेष व मोह से, रत्नत्रय हो घात।
तीन-गुप्ति-मय ध्यान से, समय स्वयंमय जात॥ 117॥

❋ ❋ ❋

जहाँ छुड़ाकर दूर हो, पर से; ऐसा कर्म।
समयलीन निश्चय कहें, प्रतिक्रम आदि धर्म ॥ 118 ॥

❋ ❋ ❋

शब्दादिक जड़ आत्म न, फिर भी मोही होय।
मोक्ष मिले ना पर-समय; अज्ञानी बन होय ॥ 119 ॥

❋ ❋ ❋

कर्म किया मैंने कहे, कर्म-चेतना होय।
सुख-दुख भोगे जब समय; कर्म-फली तब होय ॥ 120 ॥

❋ ❋ ❋

तज अज्ञान हि चेतना, समाधि में लवलीन।
ज्ञान-चेतना-मय समय, शुद्ध-ध्यान लवलीन ॥ 121 ॥

❋ ❋ ❋

नहीं शास्त्र में ज्ञान है, ना जाने वह शास्त्र।
मात्र समय ही जानता, चेतन ही वह मात्र ॥ 122 ॥

❋ ❋ ❋

ना जड़ को निज-रूप में, ग्रहण, त्याग जब होय।
विज्ञ वही निश्चय कहा, समय-स्वभावी होय ॥ 123 ॥

❋ ❋ ❋

बाह्य-मात्र के भेष ये, मोक्षमार्ग न होयँ।
रत्नत्रय व्यवहार से, समयमार्ग विधि-धोय ॥ 124 ॥

❋ ❋ ❋

रत्नत्रय हो आत्म में, निश्चय से वह आत्म।
मोक्षमार्ग होता समय, पाता है परमात्म॥ 125॥

❋ ❋ ❋

ज्ञानी बनकर तत्त्व के, अर्थ,-लीन जो होय।
समयसार परमात्म को,- पाता शिव-बन सोह॥ 126॥

❋ ❋ ❋

समयसार-स्वाध्याय से, मिला निजातम-गीत।
अध्यात्म-समयोदय कृति, रची, सार-नवनीत॥ 127॥

❋ ❋ ❋

समयआत्म-निज सार है, समय शास्त्र का नाम।
समय जैन मत है कहा, समय काल, निजधाम॥ 128॥

❋ ❋ ❋

कुन्दकुन्दाचार्य को, नमन करें दिन-रात।
समयसार के ध्यान से, रहे मोक्ष तक साथ॥ 129॥

❋ ❋ ❋

भूल-चूक गर हो गई, समयी पढ़े सुधार।
सर्व-परिग्रह त्याग कर, महाव्रतों को धार॥ 130॥

**प्रशस्ति**

लखनादौन शुभं नगर, महावीर भगवान।
शरण मिली; फिर काव्य को, लिखा समय कर पान॥ 131॥

❋ ❋ ❋

पच्चिस सौ संवत् मिला, सैतालीस के साथ।
वीर-प्रभु के मोक्ष का, परम-समय पा-हाथ ॥ 132 ॥

❋ ❋ ❋

जो भी पढ़ व गायेंगे, समयोदय गुण-गान।
उत्तम-सुख को धारकर, होगा शुभ-कल्याण ॥ 133 ॥

❋ ❋ ❋

विद्यासागर-सूरि की,- कृपा से सुकृति पूर्ण।
'**आर्जवसागर**'-सूरि की,- कृति दे सम-शिव पूर्ण ॥ 134 ॥

❋ ❋ ❋

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का

## जीवन परिचय

| | | |
|---|---|---|
| पूर्व नाम | - | पारसचंद जैन |
| पिता जी | - | श्री शिखरचंद जैन |
| माता जी | - | श्रीमती मायाबाई जैन |
| जन्मतिथि | - | 11.9.1967, भाद्र शु. अष्टमी |
| जन्म स्थल | - | फुटेरा कलाँ, जिला- दमोह |
| बचपन बीता | - | पथरिया, जिला- दमोह ( म.प्र. ) |
| शिक्षण | - | बी.ए. ( प्रथम वर्ष ) डिग्री कॉलेज, दमोह ( म.प्र. ) |
| ब्रह्मचर्य व्रत | - | 19.12.1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर ( म.प्र. ) |
| सातवीं प्रतिमा | - | 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी ( म.प्र. ) |
| क्षुल्लक दीक्षा | - | 8.11.85, सिद्धक्षेत्र अहारजी ( म.प्र. ) |
| ऐलक दीक्षा | - | 10.7.1987, अतिशय क्षेत्र थूवोनजी |
| मुनि दीक्षा | - | 31.3.1988, सि.क्षे. सोनागिरजी, महावीर जयन्ती। |
| दीक्षा गुरु | - | आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज |
| आचार्यपद | - | 25.01.2015 ( माघ शुक्ल षष्ठी ) को ( समाधि पूर्व आचार्यश्री सीमंधरसागर जी द्वारा इंदौर में ) |

## कृतियाँ व रचनाएँ

अध्यात्मिक प्रवचन, आर्जव कविताएँ, पर्युषण पीयूष, जैनागम-संस्कार ( हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, तमिल भाषा में ), आगम-अनुयोग ( भाग 1, 2 ), तीर्थोदय काव्य, लोक कल्याण विधान, सदाचार सूक्ति काव्य, ओम् योग ध्यान, पद्यानुवाद मञ्जरी ( गोमटेश थुदि, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका ), मोक्ष प्रदायक काव्य ( आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक्ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य )